वृन्दावन-धाम पुनीत परम

वृन्दावन-धाम पुनीत परम, इसकी महिमा का क्या कहना,
श्रीश्यामा-श्याम जहाँ बसते, उस पुण्य-धरा का क्या कहना,
वृन्दावन-धाम पुनीत परम, इसकी महिमा का क्या कहना,
श्रीश्यामा-श्याम जहाँ बसते, उस पुण्य-धरा का क्या कहना,
वृन्दावन-धाम पुनीत परम,

श्रीकृष्ण जहाँ यमुना-तट पर, वृषभानु-सुता संग केलि करें
अभिसिक्त प्रेम-रस श्यामा के, श्रीकृष्ण-धाम का क्या कहना,
वृन्दावन-धाम पुनीत परम, इसकी महिमा का क्या कहना,
श्रीश्यामा-श्याम जहाँ बसते, उस पुण्य-धरा का क्या कहना,
वृन्दावन-धाम पुनीत परम,

आवाज जहाँ मथने की दही, नित निद्रा प्रातः दूर करे,
होते दर्शन श्री-अंगों के, गोपीजन श्याम का क्या कहना,
वृन्दावन-धाम पुनीत परम, इसकी महिमा का क्या कहना,
श्रीश्यामा-श्याम जहाँ बसते, उस पुण्य-धरा का क्या कहना,
वृन्दावन-धाम पुनीत परम,

वृषभानु-नन्दनी श्रीराधा, श्रीश्याम को मैं नित नमन करूँ,
हे युगल-स्वरूप शरण तेरी, तूँ जान तुझे जो भी करना,
वृन्दावन-धाम पुनीत परम, इसकी महिमा का क्या कहना,
श्रीश्यामा-श्याम जहाँ बसते, उस पुण्य-धरा का क्या कहना,
वृन्दावन-धाम पुनीत परम,

रचना- अशोक कुमार खरे

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/4085/title/vrindavan-dham-puneet-param-iski-mahima-ka-kya-kehna-

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |